३३: सत्यता-९ : ईश्वर ही आनंद है |

दिनांक -१०/१२/२०११

ईश्वर ही आनंद है | ईश्वरीयता से सम्पन्न परम्परा में ही भ्रममुक्त होना, अपराध-मुक्त होना सहज है | यह प्रतिमानव स्वीकारता भी है | यह हर नर-नारी में स्वीकार्य है | मानव शब्द से नर-नारी का संयुक्त सम्बोधन है | मानव परम्परा में ही सहअस्तित्व में अनुभव है | सहअस्तित्व नित्य वर्तमान, नित्य प्रभावी होने के रूप में देखा गया है | इन तथ्यों के आधार पर अनुभवमूलक विधि से विचार होना अवश्यम्भावी है | अनुभवमूलक प्रमाण ही नियम, नियंत्रण,संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य है | सत्य अपने स्वरूप में सहअस्तित्व में अनुभव ही है | अनुभव प्रमाण ही विचार में होना स्वाभाविक है | इन तथ्यों के आधार पर अनुभव प्रधान विधि से जीना ही ईश्वरीयता है | मानव ही ईश्वरीयता का गवाही है, दूसरा कोई होता नहीं क्योंकि जीव-जानवर कोई गवाही होता नहीं, झाड पत्थर गवाही होता नहीं, इसलिये ये सब प्रतीक ही हो पाते हैं,प्राप्ति नहीं | प्राप्ति केवल ईश्वरीयता ही है | प्राप्ति का प्रमाण केवल मानव है | मानव में ही सुख, शांति, संतोष, आनंद सहज स्वीकृति है | यह सर्व देश काल में मानव का अध्ययन से पता लगता है | सभी देश काल में मानव ही नर-नारी के रूप में है | भाषाएँ भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार तैयार हुई हैं | सभी भाषाओं में सच्चाई को परखने की उम्मीद बरकरार है | सच्चाई केवल सहअस्तित्व ही है | अभी तक विगत में जितने भी भाषाएँ तैयार हुई हैं उनके मूल में समुदाय रहा है | यह सभी देश-काल में परिस्थितिवश रहा है | सच्चाई का पहचान अपेक्षा के रूप में होता है | सच्चाई को विधिवत पहचाना गया है |

सह-अस्तित्व ही परम सच्चाई है | परम का मतलब है आखिरी सच्चाई अथवा मूल सच्चाई | क्योंकि सह-अस्तित्व का नाश नहीं होता | सत्ता में पदार्थ रुपी वस्तु का होना शाश्वत है | भले ही सच्चाइयों में पदार्थ संसार का कितना भी ह्रास हो जाय, सत्ता में ही होना पाया जाता है | चाहे कितना भी विकसित हो जाय, सत्ता में ही होना पाया जाता है | इस क्रम में अध्ययन करने पर सच्चाई विकल्प रूप में प्रकट हुई | यह अध्ययन साधना, समाधि, संयम से प्राप्त हुई | यह प्राप्त होने से इसे मानव पुण्य का घटना माना | फलस्वरूप मानव को अर्पित करने का कोशिश किया | अर्पित करने के क्रम में भाषा का प्रयोग है | मानव भाषाओं में से एक भाषा हिंदी है | हिंदी भाषा में अनुभवमूलक विधि को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किये हैं | यह परम ह्रास से परम विकास तक प्रस्तुत किया गया है | परम ह्रास में परमाणुओं में परम आवेश को देखा गया है | परम विकास में पूर्ण चैतन्य अवस्था को देखा गया है | विकसित चेतना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में गण्य हुआ है |

अर्थात इन तीनों विकसित चेतनाओं के आधार पर संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था व शिक्षा को प्रस्तावित किया है | यही विकल्प है | इस क्रम में मानव अपराध- मुक्त, भ्रम-मुक्त होने की सम्भावना को स्पष्ट किया है | भ्रम- मुक्त होना ही विकसित चेतना में जीने का प्रमाण है | इसी प्रमाण में ही अपराध-मुक्त प्रमाण होना पाया गया है | यह सब मानव को सुलभ है, आवश्यक है | आवश्यक इस विधि से है कि मानव अभी तक जंगल युग से अत्याधुनिक युग तक जितने भी कार्यकलाप किया अर्थात कार्यक्रम किया, विभिन्न देश में, विभिन्न विधि से उन सबके परिणाम में धरती बीमार हो गई, ऋतुकाल असंतुलित हो गई | यदि धरती ही बीमार हो गई तो आगे पीढियां कहाँ रहेंगी? जबकि विकल्प विधि से समझने के आधार पर यह समझ में आता है कि धरती में अपने संतुलन के आधार पर ही मानव अवतरित हुआ है | अर्थात सह-अस्तित्व सहज विधि से ही मानव का

अवतरण हुआ है | मानव को सह-अस्तित्व ने अपने प्रतिरूप में प्रस्तुत किया है | सह-अस्तित्व को भुलाकर या भुलावा देकर अथवा भूल से व्यक्तिवाद, समुदायवाद में फंस गये हैं | आदर्शवाद भी इसी में फंसा है | भौतिकवाद भी इसी में फंसा है |

व्यक्तिवाद, समुदायवाद विधि से मानव सामाजिक नहीं हो सकता | भौतिकवाद के अनुसार सामाजिकता के मूल में सुविधा- संग्रह की बात कही है | यह सामान्य रूप में सभी को मिल नहीं सकता | आदर्शवाद ने भक्ति- विरक्ति को कल्याण का मार्ग बताया है | भक्ति- विरक्ति का प्रमाण प्रस्तुत नहीं हो पाया अर्थात प्रमाण अध्ययनगम्य नहीं हुआ | इसी कारणवश दोनों विचारधाराएं परम्परा में स्थापित नहीं हो पाय तथा मानव जात किंकर्तव्यविमूढता में आ गये | इन्हीं कारणों से सात करोड़ आदमी निग्रह बिंदु के सामने प्रस्तुत हो गये | इन आदमियों के तौर तरीकों से पता चलता है कि ये मानव ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी कहलाते हैं | इन सभी बातों का परिशीलन करने से पता चलता है कि मानव अपने अध्ययन को सच्चाई के अर्थ में परिशीलन करना आवश्यक है | यह सर्वमानव का कर्तव्य सा लगता है | परिशीलन का आशय व विधि यही है कि समझ में आना है | यह संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था के रूप में प्रमाणित होता है |

सर्वमानव में संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था का परिशीलन कर इनके आधार पर स्वीकारना होता है | इस क्रम में मानव अथवा हर नर-नारी में सच्चाई का पता लगाना तर्क विधि से हो जाता है | इसमें हर देश- कालीय मानव का सहज स्वीकृति होना आवश्यक है | इसी विधि से सच्चाई के साथ जीना ईश्वरीयता है | सच्चाई सहअस्तित्व ही है | विकल्प विधि से सच्चाई को सहअस्तित्व नाम दिया है | इस प्रकार सच्चाई मानव को सुलभ होने के लिये चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है | इस क्रम में मानव संस्कृति, देव संस्कृति, दिव्य संस्कृति, मानव सभ्यता के रूप में ईश्वरीयता है | ईश्वरीयता सम्पन्न मानव परम्परा ही नित्य वैभव का सूत्र व्याख्या है | यह मानव परम्परा में वैभावित होना पाया गया है | यही ईश्वरीय आनंद होने का प्रमाण है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो! |

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत